21-01-67

21-01-67

बाप नें बच्चों को अपना परिचय दिया। सबको तो नहीं देंगें। फिर बच्चों को बाप का परिचय देना है। बाप का परिचय कोई डिफीकल्ट नहीं है। उनका नाम ही है परमात्मा शिव। गाया भी जाता है शिव परमात्मा नमः शंकर परमात्मा नमः वा विष्णु परमात्मायें नमः नहीं कहा जाता। शिव परमात्मायें नमः कहा जाता है। तो पिताश्री शिव नमः हो गया। पिता अक्षर डालनें सें बच्चे तो है ही सब एक बाप के। यह हुआ परिचय फिर समझाना चाहिये बाप नई दुनिया रचते है। उसमें होता है लन्न. का राज्य। बाप आकर राजयोग सिखाते है। क्योंकि भारत में जब जन्म लेते है तो बाप नई दुनिया की स्थापना पुरानी दुनिया का विनाश कराते है। राजयोग शिव परमात्मा ही सिखाते है। भगवान एक ही है। वो निराकार है। कृष्ण मनुष्य है। जरूर श्रीकृष्ण की आत्मा नें आगे जन्म में बाप सें राजयोग सीख वर्सा पाया होगा। नोट करना चाहिये और फिर ऐसे ही लिखवाना चाहिये। अब वो ही समय है नां। महाभारत का समय है। बाप राजयोग सिखा रहे है ब्रह्मा दवारा। ब्रह्मा मुखवंशावली जरूर शुरू में होते चाहिये। पहले ब्राहम्ण फिर है देवतायें। यह सब ब्रह्मा कुमार कुमारियाँ कहलाते है। अब राज्य भाग दे रहे है तब तो हम कहते है नां। अच्छी रीती बाप और रचना का परिचय देना है। बाप का परिचय बच्चे ही दे सक्ते है। ऐसे-2 विचार सागर मथन कर युक्तियां रचनी होती है। बाप का परिचय जरूर देना है। है भी सब का बाप, ब्राहम्ण ही = बाप का परिचय दे सक्ते है। ब्रह्मा है एक शिव बाबा का बच्चा। प्रजापिता तो यहां है नां। ब्रह्मा दवारा ही रचना रचते है। प्रजापिता भी ब्रह्मा को ही कहा जाता है। विष्णु वा शंकर को प्रजापिता नहीं कहा जाता तो ऐसे -2 समझाना चाहिये। मन्दिरों में गंगा घाट पर भी समझा सक्ते है। सदगती दाता सर्व का एक ही बाप है। यह सब पुआइन्टस बुधी में धारण करो। नोट रखने अच्छे है। पक्के-2 याद कर देना चाहिये तो समझानें में भी सहज होगा। बड़ी-2 स्मरण भी होगा तो बहुत खुशी होगी। सर्विस किया तो उन्नती को पा नहीं सक्ते। बहुतों का आप समान बनानें सें मर्तबा ऊंच होगा। पास विथ आनर होना चाहिये। ओम

23-1-1967: रात्री क्लास:—भगवान को बाप तो सब समझते है। अंग्रेजी में भी कहते है गाड फादर। अब कोई सें पूछा जाये कि गाड फादर को जानते हो? जब कहा जाता है गाडफादर तो जरूर बापऔर बाप के वर्से को जानते होंगे। फिर नेती-2 कह ही कैसे सक्ते है। गाड फादर तो सबका फदर ठहरा नां। वो है रचता नई दुनिया का। नई दुनिया है सतयुग पुरानी दुनिया है नर्क। कितनी सहज बात है। इसको स्वर्ग तो कोई नहीं कहेंगें। इसको कहा ही जाता है पुरानी दुनिया कलियुग। समझाना चाहिये कि जब गाड फादर कहते हो तो तो सतयुग का वर्सा मिलना चाहिये। जरूर मिला होगा, परन्तु ऐसी सहज बात भी कोई समझ नहीं सक्ते। स्वर्ग कब था यह किसीको पता नहीं पड़ता है। यह भी जानते है लन. स्वर्ग के मालिक थे जरूर। इनको बादशाही बाप सें मिली होगी। अच्छा गाड फादर रहते कहां है? कहेंगें परमधाम में। तो जरूर तुम बच्चे भी वहां के रहनें वाले होंगें। मनुष्यों की आसुरी बुधी होंनें कारण ऐसे-2 समझ विचार उनकें चलते ही नहीं है। बाप कितना सहज करकें बताते है। अभी तो बच्चों को मालूम हुआ कि क्योंकि हम शिव बाबा का वर्सा ब्रह्मा दवारा ले रहे है। यह जो बैठा हुआ है वो है साधारण तन। प्रजापिता कोई साधारण

****

थोड़े होंगें। वो तो ऐसे हुये जैसे कि शिव बाबा। शिव बाबा की सब आत्मायें सन्तान। प्रजापिता ब्रह्मा के भी सब बच्चे। तो साधारण जरूर और है जो प्रजापिता ब्रह्मा नहीं है। यह साधारण था नां। वो प्रजापिता नहीं था। पत्थर बुधी होनें कारण कोई समझते नहीं है। अभी तुम समझते हो क्योंकि भारत स्वर्ग था। जरूर बाप नें उनको वर्सा दिया होगा। शास्त्रों में आयु बड़ी-2 लगा दी है। तुम बच्चे जानते हो यह दादा भी राजयोग सीख रहे है और कृष्ण बननें वाले है। वो ही श्रीकृष्ण की आत्मा 84जन्मों के बाद यह बैठी है। इनको ही कहा जाता है सांवरा गांव का छोरा। कृष्ण तो हो नहीं सक्ते। बाकी उनकी आत्मा तो है नां। गाते भी है सांवरा गांव का छोरा। कृष्ण को वैसे कह सक्ते है। वो तो विश्व का मालिक उनको हम किस

21-10-67

हिसाब से कह सकते है गाँव का छोरा मक्खन चुरा कर खाने वाला। अब कितने समझदार बन गये हो। सारे विश्व के आद मध्य अन्त को जान रहे हो। सारी विश्व बुधी में खड़ी है। सारे झाड़ की आदमध्य अन्त का नालेज बुधी में है। बाप कहते है मुझे और मेरी रचना को जानने से तुम सारे विश्व के मालिक बन सकते हो। मूल बात है आत्मा जो पतित है वो पावनजरूर होनी चाहिये। नालेज तो बड़ी डैम चीप है। उस नालेज में तो बहुत खर्चा है इसमें कोई खर्चा नही। सिर्फ मेहनत है तो बाप को याद करने में। पावन जब तक नां बनेंगे तो पावन दुनिया का मालिक कैसे बनेंगे। याद के लिये बाबा कितना समझाते है।आगे तुम लौकिक बाप को याद करते थे अब तुम लौकिक के होते पारलौकिक को याद करो। कर सकते हो। बेहद के परलौकिक बाप को और कोई नही जानते। बाप सत है चैतन्य है ज्ञान का सागर है। शरीर तो जड़ पाँच तत्वों का बना हुआ है। आत्मा तो आत्मा है। किस से बना हुआ है कुछ कह नही सकेंगे? आत्मा तो अनादी अविनाशी है। कितनी छोटी आत्मा भृकुटी के बीच में रह कर कितना पार्ट बजाती है। यह सब बातें है नई। शास्त्रों में तो है नही। तुम बच्चों को अपने को आत्मा समझ कर बाप को भी ऐसे ही याद करना है। बिंदी में कितना ज्ञान है। बीज छोटा होता है नां। सरसों का दाना अथवा खसखस कितनी छोटी होती है। तुम बच्चों को बाप कितना सहज बताते है।बाप कहते है तुम भी आत्मा मैं भी आत्मा हूं। मैं सुप्रीम हूं। मुझे परम-आत्मा कहते है। और कोई मनुष्य नही जिसकी बुधी में झाड़ का ज्ञान हो। इसको कहा ही जाता है सहज याद बाप और वर्से की। बेबीज तो नही हो बड़े हो समझते हो। फिर भी माया भुला देती है। बाप और वर्से की खुशी में रहने नही देती है। तुम बच्चे सम्मुख सुनते हो। जैसे बाप नालेज फुल वैसे हीहम भी नालेज फुल। तुम्हारे और बाप में फर्क ही क्या है? वो बाप की आत्मा नालेज फुल पूर्ण पवित्र है। तुम पवित्र बनने लिये पुरूषार्थ कर रहे हो। अब 84का चक्र पूरा होता है। अब चलना है घर। नाटक पूरा हुआ। तुम इसी खुशी में रहो तो भी कितना अच्छा है। आपस में भी यही बातें करते रहो। बाकी इरमुई उगमुई बातों में जाती नही। घर में तो ऐसा साथ मिल नां सकें। बुधी में आता है यह विचारे बगुले है। कुछनही जानते। जैसे बहुत पढ़ा हुआ मनुष्य एक खेतीबाड़ी करने वाले मनुष्य के लिये कहेंगे विचारा...अब तुम समझते हो यह विचारी प्राईमिनिस्टर आद क्या है। पहले नम्बरवाले ल. न. में भी यह नालेज तो इनमें न. हो सकती है।ऐसे-2 अपने साथ बातें करने से बहुत सुख मिलता है।रोमांच खड़े हो जाते है। बाप कहते है मैं सब बच्चों को रावण राज्य से, दुःख से छुड़ाने आया हूं। बाप आते ही है बच्चों को सुख देने लिये। कित्त खुशी होती है। इनकी आत्मा भी कहती है मुझे भी बहुत खुशी होती है।अकेला बच्चा हूं ब्रह्मा। यह सब वर्सा बाप से ले रहे है। ये भी बाप से ले रहा हूं। बाबा इनको पढ़ाते है तो ये भी पढ़ता हूं। कितना वन्डर है।अच्छी तरह अन्तर्मुखी हो कर रहे तो कितनी खुशी हो। सम्मुख रहने से रिफ्रेश अच्छे होते है। कहीं भी जावेंगे तो कहेंगे बाप दादा आरहे है जिनसे ही हम वर्से के मालिक बनते है। मोस्ट सिम्पल है। माया के तूफान तो आवेंगे।यह याद स्थाई रहे वो अवस्था अन्त में होगी। अभी पूरा पुरूषार्थ हुआ नही है।अभी पढ़ना है फिर हम मृत्यु लोक से अमर लोक में ट्रान्सफर हो जावेंगे। अमर लोक से मृत्युलोक , मृत्यु लोक से अमर लोक यह चक्र है।यह बच्चों को समझ में रहे तो अतिइन्द्रिय सुख की महसूसता हो। डोज़ ऐसा है जो इसका नशा एकदम चढ़ जाना चाहिये। यह अविनाशी ज्ञान का डोज एक ही जन्म में मिलता है।इनको रूहानी ज्ञान कहा जाता है। गाया भी जाता है मनुष्य से देवता किये करत नां लागी वार। चढ़ती कला में कितना थोड़ा समय लगता है। उतरती में कितना समय लगता है। तमो से सतोप्रधान बनने में बहुत मेहनत लगती है